costs many trees. I was just requesting my friends to calculate the cost involved in this process. Sir, printing a single year of MTNL's directory requires almost 12,000 tonnes of paper, and you can calculate how many types of trees would have to be fallen for providing that kind of pulp for making that kind of paper. And, if this was to be done every month to keep up with cellular services, then we will be deforesting India very soon.

SHRI RAMA MUNI REDDY SIRIGIREDDY: Sir, the hon. Minister was just now mentioning about the cost involved in printing of directories. I would like to know whether an enquiry has come for advertisements in the latest version of directories. If yes, then what amount are you expecting from the advertisements?

SHRI ARUN SHOURIE: Sir, I was told by the CMD, MTNL that they are exploring the question. They have actually put forward a proposal to the Telecom Commission that we should do away with directories altogether because of these difficulties. But, the alternative is to introduce advertising and so on, but I do not know what rates would be economical, at what rates we will be able to get adequate advertising because it is not a question of just announcing the rates, but it is a commercial decision which will be taken, Sir, by the MTNL and, subsequently, by the BSNL for the other directories in the country.

सूचना उद्योग के कारोबार में वृद्धि

*343. **श्री राजीव रंजन सिंह 'ललन' :**

श्री कपिल सिब्बल:

क्या संचार और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) क्या यह सच है कि सूचना प्रौद्योगिकी उद्योग द्वारा किये जा रहे कुल कारोबार में लगातार वृद्धि हो रही है;

(ख) यदि हां, तो वर्ष 2002-2003 के दौरान देश में तथा विदेश में इस उद्योग का कुल कितना कारोबार हुआ; और

(ग) यह कारोबार पिछले वर्ष की तुलना में कितना अधिक है?

संचार और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री तथा विनिवेश मंत्री (श्री अरुण शौरी): (क) से (ग) एक विवरण-पत्र राज्य सभा के पटल पर रख दिया गया है।

† सभा में यह प्रश्न श्री राजीव रंजन सिंह 'ललन' द्वारा पूछा गया।

विवरण

(क) जी, हां

(ख) भारत में सूचना प्रौद्योगिकी उद्योग का कारोबार वर्ष 2002-2003 के दौरान, 64,150 करोड़ रुपए मूल्य का था।

(ग) सूचना प्रौद्योगिकी उद्योग ने पिछले वर्ष की तुलना में वर्ष 2002-03 के दौरान 26 प्रतिशत की वृद्धि हासिल की।

Increase in turnover of IT industry

†343. SHRI RAJIV RANJAN SINGH 'LALAN': ††

SHRI KAPIL SIBAL :

Will the Minister of COMMUNICATIONS AND INFORMATION TECHNOLOGY be pleased to state :

(a) whether it is a fact that overall turnover of the information technology industry is constantly increasing;

(b) if so, the total turnover of this industry in the country and abroad during the year 2002-2003; and

(c) to what extent it is higher in comparison to the last year?

THE MINISTER OF COMMUNICATIONS AND INFORMATION TECHNOLOGY AND MINISTER OF DISINVESTMENT (SHRI ARUN SHOURIE): (a) to (c) A Statement is laid on the Table of the Rajya Sabha.

Statement

(a) Yes, Sir.

(b) The turnover of the Information Technology industry in India during the year 2002-2003 was of the order of Rs.64,150 crore.

(c) The Information Technology industry turnover registered a growth of 26% during the year 2002-03 in comparison to the last year.

श्री राजीव रंजन सिंह 'ललन': सभापति महोदय, जो स्टेटमेंट सरकार ने दिया है, वह पूर्ण नहीं है। सप्लीमेंट्री पूछने से पहले मैं चाहूंगा कि सरकार उस स्टेटमेंट को पूर्ण कर दे।

सभापति महोदय, मैं आपका ध्यान दिलाना चाहूंगा कि मेरा प्रश्न था कि 'वर्ष 2002-2003 के दौरान देश में तथा विदेश में'...., जबकि, महोदय, उत्तर में है कि 'भारत में सूचना और प्रौद्योगिकी' ... तो सिर्फ देश की सूचना हमको मिली है लेकिन विदेशों में क्या कारोबार हुआ इन्फारमेशन एंड

† Original notice of the question was received in Hindi.

††The question was actually asked on the floor of the House by Shri Rajiv Ranjan Singh 'Lalan'.

टेक्नोलॉजी में, उसकी कोई सूचना हमको नहीं मिली है। इसलिए, सभापति महोदय, मेरा अनुरोध होगा कि पहले मेरी सूचना पूर्ण हो जाए, फिर मैं सप्लीमेंट्री पूछूंगा।

श्री अरुण शौरी: सर, वर्ल्ड के बारे में मैं ऐस्टिमेट ही दे सकता हूं, मगर वर्ल्ड आई॰टी॰ मार्किट जो है, it is about 852 billion dollars. Of these 852 billion dollars, Sir, the hardware accounts for about 321 billion dollars, and software and services account for about 531 billion dollars. The India's share in the total IT market of the world is about 1.6 per cent. In software and software services, we are 2.4 per cent, but in hardware, we are only 0.6 per cent. और सर, जो डिटेल्स के बारे में इन्होंने कहा कि पूरी स्टेटमेंट नहीं दी गई है, उसमें जो इन्होंने पूछा था उसकी तो फिगर्स दे दी गई है। But, I will, with your permission, read out the details also. That in production in 2002-03, the IT and electronics accounted for Rs. 97,400 crores of output. This was an output growth of 21.6 per cent last year. Sir, in hardware, he have already crossed Rs. 37,500 crores which was a growth of about 14.5 per cent. In software and services, we are now almost Rs. 60,000 crores, which is a growth rate of 26 per cent in spite of the world recession in the markets where we are doing these exports. In exports, in IT and electronics, our exports are now Rs. 53,100 crores registering a growth of 26 per cent. In hardware, they are Rs. 5,600 crores. Here, there was a decline of 3 per cent because of world recessionary conditions. In software and services, our exports are now Rs. 47,500 crores, a growth of 30 per cent last year. In IT-enabled services, which is a great growth area in India now, the exports are already Rs. 11,700 crores and they, last year, registered a growth of 65 per cent. So, this is really very commendable. About the share of IT in GDP, it is already 2.4 per cent and the share of IT in the total exports of India is already 20.4 per cent, now, almost equal to that of agriculture. If he wants further details, I can give them.

श्री राजीव रंजन सिंह "ललन": सभापति महोदय, मेरा पहला सप्लीमेंटरी यह है कि विदेशों में जो Information and Technology के सेक्टर में जो कारोबार हुआ, उसमें हमारी जानकारी के मुताबिक वह सिर्फ एक दो देश तक ही सीमित है। मैं आपके माध्यम से माननीय मंत्री जी से यह जानना चाहूंगा कि अन्य देशों के साथ Information and Technology के कारोबार का विस्तार करने की हमारी क्या योजना है?

श्री अरुण शौरी: सभापति महोदय, चूंकि Information and Technology का प्रयोग ही वैस्टर्न यूरोप और युनाइटेड स्टेट्स में ज्यादा हो रहा है, इसलिए इंडियन कंपनीज ने वहीं फोकस किया

है। मेंबर साहब ने ठीक कहा कि हमारे लिए बहुत जरूरी है कि हम अपनी export destination को diversify करें। इसके लिए कई चीजें साथ-साथ की जा रही हैं। मैं पिछले महीने जापान में था। वहां इंडियन IT firms का एक फेयर हमने आर्गनाइज किया था और मैंने देखा कि उनमें बहुत जोश था उन चीजों को देखने के लिए और हमारी कंपनीज ने जो नए-नए सोल्यूशन वहां प्रोवाइड किए हैं, उनके बारे में बहुत appreciation था। अगर आप इज़ाज़त दें तो मैं एक ही example देता हूं। आप जानते हैं कि जापान के बैंकों की पिछले 10-15 सालों में बहुत बुरी हालत रही है क्योंकि political lending के कारण उनके non-performing assets इतने ज्यादा हो गए थे कि कई बैंक collapse कर गए। उनके 4 बड़े बैंकों में से एक बहुत बड़ा बैंक था, वह 1998 में bankrupt हो गया। उनकी गवर्नमेंट ने कई बिलियन डॉलर्स उसमें डाले तब भी उसे American Consortium को बेचना पड़ा। उसका नाम था Shinsai Bank. आपको ताज्जुब होगा कि केवल 2 ही सालों में यही एक बैंक है जो बिल्कुल turn-around करके profitability में आ गया है। यह सारा turn-around भारत के 1,000 IT professionals ने और financial analysts ने किया है। मुझे जापान में जो बैंकिंग इंडस्ट्री के लोग मिले, IT इंडस्ट्री के लोग मिले, वे इसको बहुत appreciate कर रहे थे। इस तरह जापान में बहुत काम हो रहा है। जर्मनी में भी हमने फेयर आर्गनाइज किया था और वहां एक डेलीगेशन भी गया था, मिस्टर नारायणमूर्ति उसके हैड थे। उसमें हमारी गवर्नमेंट ने और एम्बेसी ने काफी हेल्प की थी। जर्मन IT users के पास हमारी फर्म्स गईं कि हम उनको और क्या सर्विसेज दे सकते हैं। इसके लिए उन्होंने बहुत काम किया।

One of the world's biggest domestic markets is China. इसलिए जब प्राईम-मिनिस्टर साहब चीन गए थे तो वहां भी उन्होंने एक IT Seminar inaugurate किया था, उसमें उन्होंने खुद भाषण दिया। अब हमारी कई IT firms वहां establish कर रही हैं, to exploit the domestic market in China and also to be of service to multi-nationals, who have set up manufacturing facilities in China जिनके साथ हम वैसे ही, through Bangalore and others, in touch रहते हैं। इसलिए मेंबर साहब का कहना बिल्कुल ठीक है। हम इस पर बहुत ज्यादा काम कर रहे हैं। खुशी की बात यह है कि हमारी इंडस्ट्री भी इस पर बहुत ज्यादा गौर कर रही है क्योंकि अगर किसी economy में recession हो जाता है तो हमारी मार्केट्स को अफेक्ट नहीं होना चाहिए, हमारी इंडस्ट्री अफेक्ट नहीं होनी चाहिए।

श्री सभापति: श्री संजय निरुपम।

श्री राजीव रंजन सिंह "ललन": सर, दूसरा सप्लीमेंटरी। अभी एक ही सवाल हुआ है। सभापति महोदय, Information & Technology का बिज़नेस 1998-99 में शुरू हुआ था।

और जहां तक मेरा ख्याल है पूर्व के बरसों में हम 35 से 50 प्रतिशत तक का कारोबार कर रहे थे, उसमें प्रति वर्ष वृद्धि हुई लेकिन इस समय सरकार ने जो उत्तर दिया है, उसके मुताबिक कारोबार में 26 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। ऐसा लगता है कि पिछले बरसों में हमारी जो वृद्धि हुई थी, उसकी आधी वृद्धि इस बार हुई है। तो कहीं न कहीं क्या इसमें हम विफल रहे हैं? यदि विफलता रही है तो उसके क्या कारण हैं? उस स्तर को बनाए रखने के लिए सरकार कौन-कौन से कदम उठाने जा रही है?

श्री अरुण शौरी: सभापति महोदय, जब हम ज़ीरो से एक पर आए तो the rate of growth is infinity. जब एक से दो पर जाएं तो rate of growth is 100 per cent. दो से तीन तक जाएं तो it becomes 50 per cent. इसलिए ग्रोथ का arithmetical कारण है कि अब आपकी IT industry, 10 billion dollars की इंडस्ट्री हो गई है और इतनी सशक्त इंडस्ट्री बन गई है कि अब दूसरे देश हमारे खिलाफ प्रोटेक्टिव स्टेप्स ले रहे हैं। और वहां के जैसे आप जानते हैं सर, कि ट्रेड यूनियन वगैरह में बात है कि उनके जॉब छीने जा रहे हैं एक तो वह कारण है। सर, दूसरे, यह बात ठीक है कि उनके यहां मार्केट में रिसेशन होना है, तीसरा, कि कई कंट्रीज में अब बैकलैश शुरू हुई है, जैसे हमारे मेन्युफेक्चरर्स बहुत चिल्लाते हैं सिन्हा साहब जब फाइनेंस मिनिस्टर थे तो इसी हाउस में कितने लोग चिल्लाया करते थे कि चायना की बैटरीज आ गई हैं जिससे हमारी फैक्ट्रीज बंद हो रही हैं। अब इंडिया इतनी डामिनेंट आई॰टी॰ पॉवर बन गई है, इसीलिए कई कंट्रीज में बैकलैश के कारण भी जरा सा स्लो हो गया है और दूसरे यह क्यों कर रहे हैं, मैंने देखा है बड़ी कम्पनीज के वहां के लोग हमारे यहां आते हैं। तकरीबन जो फॉरच्यून 500 की कम्पनीज हैं उनमें से 100 कम्पनीज की रिसर्च एंड डवलपमेंट फेसीलिटीज आज इंडिया में हैं। चायना में एक हजार बड़ी कम्पनीज में से सिर्फ 33 कम्पनीज की रिसर्च एंड डवलपमेंट फेसेलिटीज हैं। हमारे यहां 100 की हैं। मगर अब वे जरा चुपके-चुपके रिसर्च फेसेलिटीज को एक्सपेंड करते हैं क्योंकि उनको डर लगता है कि अगर हम एनाउंस करेंगे बिल्डिंग इनएग्युरेट करने के लिए कि इंडिया में हमने अब एक और फेसेलिटी खोल दी तो उनको अपनी कंट्री में बैकलैश का सामना करना पड़ेगा। मगर ग्रोथ इसमें काफी चल रही है और मैंने देखा है कि हमारी इण्डस्ट्री में सिर्फ बड़े नाम ही नहीं मगर जो और यूनिट भी हैं वे भी बहुत नई तरह का काम कर रही हैं।

श्री संजय निरुपम: सभापति जी, मैं दो छोटे-छोटे सप्लीमेंट्री पूछना चाहूंगा। एक तो यह कि 64 हजार करोड़ जो लगभग आई॰टी॰ इण्डस्ट्री का पूरा टर्न ओवर बताया गया उसमें सोफ्टवेयर कम्पनीज ही बड़ी कम्पनीज हैं, जैसे-इंफोसिस, सत्यम, विप्रो-प्रेमजी वाली। इन कम्पनीज का, जो सोफ्टवेयर जाइंट हैं, उनका इस समय पूरी इण्डस्ट्री में शेयर कितना है? दूसरा, मुझे यह जानना है कि 9/11 के बाद लगातार इस सैक्टर में जो हमारे आई॰टी॰ प्रोफेशनल अमेरिका जाते थे, जो हमारा सबसे बड़ा डेस्टीनेशन था, वहां पर अनएम्प्लोयमेंट डवलप हुआ और एक बी-टु-बी करके एक नया टर्म डवलप हुआ-बैक टू बौम्बे। जो हमारे मुम्बई के या दिल्ली के, विशेषकर मुम्बई के जो अच्छे बच्चे

वहां जाकर पढ़ते थे और उनको नौकरी मिलती थी, वे बड़े पैमाने पर वापिस लौटने लगे। आपने बताया कि आई॰टी॰ इण्डस्ट्री का ग्रोथ 26 परसेंट हो रहा है, लेकिन साथ-साथ इसमें अनएम्प्लोयमेंट बढ़ा है। मंत्री जी बता सकते हैं कि एम्प्लोयमेंट की जो ग्रोथ रेट थी उस पर कितना असर पड़ा है। 9/11 के बाद? दूसरे, बहुत सारे जो कम्प्यूटर ट्रेनिंग इंस्टीट्यूट्स हैं, एक जमाने में वहां एडमिशन लीजिए और छः महीने बाद नौकरी मिलती थी यानी कि जॉब मिल जाता था। आज एन॰आई॰टी॰ या एप्टेक जैसे जो कम्प्यूटर ट्रेनिंग इंस्टीट्यूट्स हैं, वहां से लोग ट्रेनिंग लेकर निकल रहे हैं, सर्टिफिकेट लेकर निकल रहे हैं लेकिन उनको आज की तारीख में जॉब नहीं मिल रही है। तो अनएम्प्लोयमेंट की क्या पोजीशन है आई॰टी॰ सैक्टर में या फिर आई॰टी॰ ट्रेंड बच्चों के बीच, यह बताने की कृपा करें?

श्री अरुण शौरी: सर, जो प्रिसाइज फिगर्स हैं कि जो 5-6 जाइंट्स हैं इंडिया में उनका कितना शेयर है इस सारी आई॰टी॰ इण्डस्ट्री में, वह फिगर्स में जरूर आब्टेन करके दूंगा क्योंकि मुझे इस समय जुबानी याद नहीं हैं। आपकी बात ठीक है, जो दूसरा पहलू आपने उठाया है कि 9/11 के बाद वीजा रेस्ट्रेक्शंस ज्यादा कड़ी की गई है। सर, एक तो उन्होंने 9/11 के बाद सिक्योरिटी के कारण वीजा रेस्ट्रेक्शन कड़ी ही की है। दूसरा, जैसे संजय साहब ने कहा कि उनके यहां अब अनएम्प्लोयमेंट काफी बढ़ गई है स्पेशली एजूकेटेड क्लासिज में। आप देखेंगे कि मैं जब जर्मनी गया तो मुझे ताज्जुब हुआ कि तकरीबन 9 परसेंट अनएम्प्लोयमेंट है और यूनाइटेड स्टेट्स में भी रिसेशन के कारण काफी अनएम्प्लोयमेंट है आई॰टी॰ सैक्टर में। ...(व्यवधान)

श्री सभापति: आप असली आए हैं या नकली?

नौवहन मंत्री (श्री शत्रुघ्न सिन्हा): असली हूं सर।

श्री सभापति: आप असली हैं तो बैठ जाइए।

श्री शत्रुघ्न सिन्हा: सर, आप कहें तो सर्टिफिकेट ले आऊं।

श्री सभापति: मैं आपकी बात का भरोसा करता हूं। बैठ जाइए।

श्री अरुण शौरी: सर, मगर उसका एक कारण अनएम्प्लोयमेंट का है, पर उसके लिए यही नहीं कि जो कोटा फिक्स किए गए थे, 195 हजार को कम कर दिया गया है और 65 हजार को वीजा दिए जाएं। लेकिन उसका दूसरा पहलू यह हो गया है कि वीजा देने में वे बहुत टाइम लगा देते हैं इसी से हमारे देश के बिजनेस आपरेशन जरूर इफेक्ट हो रहे हैं। हमने फॉरेन मिनिस्ट्री के द्वारा उनके फॉरेन स्टेट डिपार्टमेंट वगैरह से भी कांटेक्ट किया है। मैंने बात की है। कॉमर्स मिनिस्टर साहब ने उनके ट्रेड रिप्रेजेंटेटिव से भी बात की है और हम नेस्कॉम के थ्रू यह बहुत काम कर रहे हैं। मगर इण्डस्ट्री की यह एडवाइस रही है कि हम यह काम करें और इसे ज्यादा पब्लिसिटी न दें क्योंकि फिर उससे वे और भी काउंटर मेजर्स लेंगे।

MR. CHAIRMAN: Question Hour is over.